महीने मिलता था, कुछ पिता जी की पेंशन आती थी। किसी तरह घर की गाड़ी खिंच रही थी।

सीए बेहतरीन नम्बरों से पूरा कर लेने पर मैं अग्रवाल सर के घर मिठाई लेकर गया। वहां मेरी मुलाकात उनकी इकलौती बेटी गरिमा से हुई। मैं, सर और उनकी बेटी काफी देर तक बातें करने रहे। उनकी बेटी एकटक मुझे ही देख रही थी।

अगले दिन जैसे ही मैं नहाकर निकला था कि मेरे घर के सामने अग्रवाल सर की कार आकर रुकी। फल, मिठाई और कई सारे तोहफों के साथ उन्होंने घर में प्रवेश किया। मैंने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। वह मेरी मां से मिलना चाहते थे।

माँ के कमरे में आने पर अग्रवाल सर ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया और बोले, 'आज मैं जयंत के सीनियर की हैसियत से नहीं बल्कि एक लड़की के बाप की हैसियत से आया हूँ। मेरी गरिमा को अपनी बहू स्वीकार कीजिए।'

माँ भौंचक्की रह गयीं। मैं भी हैरान था कि अग्रवाल सर मुझे अपना दामाद बनाना चाहते हैं पर मैं खुश भी बहुत हुआ क्योंकि इस शादी से मुझे वह सब मिल जाता जिसकी मुझे हमेशा से लालसा थी। ना का तो कोई प्रश्न ही नहीं था। चट मंगनी पट ब्याह हो गया।

इस बेमेल शादी का राज धीरे-धीरे सामने आने लगा। गरिमा का स्वभाव बहुत ही विचित्र था। बात-बात पर लड़ना, मार-पीट पर उतर आना और हर दूसरे चौथे दिन मायके भाग जाना। सर तो यह जानते ही थे कि गरिमा नार्मल लड़की नहीं है इसीलिये उन्होंने मुझे चुना कि मैं उनके सामने दबा रहूँगा और गरिमा का सही गलत सब व्यवहार बर्दाश्त कर लूंगा।

पूरे घर को गरिमा ने नर्क बना दिया था, दो चार महीने में ही माँ चारपाई से लग गयी थी। एक दिन तो छोटी सी बात पर गरिमा ने अपनी कलाई की नस काट ली। बड़ी मुश्किल से उसकी हालत काबू में आई। मोटा दहेज और भविष्य में मिलने वाली अग्रवाल सर की पूरी जायदाद का लालच मुझे सब बर्दाश्त करने के लिये विवश कर रहा था। सर मुझे समझाते कि गरिमा बिन माँ की बच्ची है धीरे-धीरे वह सब समझने लगेगी पर अपनी बेटी को वह कभी कुछ नहीं कहते थे।

फिर वह कयामत का दिन आया। सुबह गरिमा ने मेरी छोटी बहन से चाय बनाने को कहा। गलती से जया से चाय में शक्कर ज्यादा पड गई। इससे आगबबूला होकर गरिमा ने जया के चेहरे पर गरम चाय फेंक दी। यह देखकर

फिर वह कयामत का दिन आया। सुबह गरिमा ने मेरी छोटी बहन से चाय बनाने को कहा। गलती से जया से चाय में शक्कर ज्यादा पड गई। इससे आगबबूला होकर गरिमा ने जया के चेहरे पर गरम चाय फेंक दी। यह देखकर मैं अपने गुस्से पर काबू न रख सका और गरिमा को एक चांटा रसीद कर दिया। बस, फिर क्या था बिफरी हुई शेरनी की तरह वह मुझ पर झपट पड़ी और मेरी शर्ट फाड़ डाली। यही नहीं वह घर छोड़कर मायके जाने पर उतारू हो गयी। मैंने अपने आप को सम्भाल कर उससे माफी मांगी और रूक जाने की मिन्नतें की।

मैं अपने गुस्से पर काबू न रख सका और गरिमा को एक चांटा रसीद कर दिया। बस, फिर क्या था बिफरी हुई शेरनी की तरह वह मुझ पर झपट पड़ी और मेरी शर्ट फाड़ डाली। यही नहीं वह घर छोड़कर मायके जाने पर उतारू हो गयी। मैंने अपने आप को सम्भाल कर उससे माफी मांगी और रूक जाने की मिन्नतें की।

वह तो जैसे कुछ सुनने को तैयार ही नहीं थी। मैंने उसका हाथ पकड़कर उसे कमरे में ले जाने की कोशिश की तो वह मेरा हाथ छुड़ाकर बालकनी से नीचे कूद गयी। हम सब की सांसें मानो थम सी गयी थी। जल्दी से हम नीचे पहुंचे तो गरिमा लहलुहान पड़ी थी। जान तो उसकी बच गई पर चोट उसे बहुत आयी थी, दोनों पैर टूट गये थे।

खबर मिलने पर अग्रवाल सर भी अस्पताल पहुंचे और मेरी जम कर खबर ली। उन्होंने पुलिस भी बुला ली थी। होश में आने पर गरिमा ने यह बयान दिया कि दहेज के लिये हम सबने उसे पीटा और बालकनी से नीचे फेंक दिया। मुझे अरेस्ट कर लिया गया। माँ को बूढ़ा बीमार होने के कारण और जया को कम उम्र की होने के कारण जमानत मिल गई पर मुझ पर मुकदमा चला और मुझे सजा हो गई।

हम लोगों ने हाई कोर्ट में अपील की। वहां से मुझे जमानत मिल गई। अब मैं जमानत पर बाहर हूं। माँ यह सब कुछ बर्दाश्त न कर पाने के कारण दुनिया से विदा हो गई। मैंने किसी तरह जया की परवरिश की। जिन्दगी तलवार की धार पर है कि जिस दिन हाईकोर्ट में मेरे मुकदमे की सुनवाई शुरू होगी उस दिन क्या होगा?

'गरिमा का क्या हुआ? मैंने टोका।

'उसका क्या होना हैं?

मजे से अपने पापा के घर में रह रही है। अग्रवाल सर उसके सब नखरे उठाते हैं। उस दिन से मैंने उन लोगों के घर की तरफ जाना ही छोड़ दिया। घर पर ही जनरल स्टोर खोल लिया है। दो महीने बाद जया की शादी है। यहीं कानपुर में रिश्ता तय हुआ है, वही डेट वगैरह फाइनल करने आया था। वह हंसी खुशी विदा हो जाए। मैं अपने भाग्य का लिखा भुगतूंगा।'

जयंत की ट्रेन का टाइम हो रहा था। मैं भी उससे विदा होकर चल दिया। रास्ते भर मैं यही सोचता रहा कि जयंत की लालसा या अग्रवाल साहब का पुत्री प्रेम क्या वजह थी जो एक हंसता खेलता परिवार बर्बाद हो गया। आखिर गलती किसकी? ■